International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 7 Ser. II || July. 2020 || PP. 85-90

राजनीतिक चिन्तन
(POLITICAL THOUGHT)

डॉ0 राधिका देवी
एसो. प्रोफेसर(राजनीति विज्ञान)
ए0के0पी0(पी0जी0) कॉलिज, खुर्जा
जिला–बुलन्दषहर (उ0प्र0)

मनुष्य जीवन के विभिन्न पक्षों में उसका राजनीतिक पक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि इस पक्ष ने उसके जीवन के अन्य पक्षों, यथा–सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि को प्रभावित ही नहीं किया है वरन् उन्हें एक निश्चित स्वरूप और उनके विकास क्रम को एक नया मोड़ भी प्रदान किया है। इस तरह उसने अपने अस्तित्व और क्रिया–कलापों से मानव जाति के इतिहास पर एक निश्चित छाप छोड़ी है। मानव के इस राजनीतिक पक्ष का सीधा सम्बन्ध राज्य से रहा है जो आदिकाल से वर्तमान समय एक सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली संगठन बना हुआ है और पूर्वानुसार मानव समाज की विविध गतिविधियों को प्रभावित कर रहा है।[1]

राजनीतिक चिन्तन की विषय–वस्तु
(SUBJECT-MATTER OF POLITICAL THOUGHT)

ऐसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली संगठन–राज्य (State) का सांगोपांग अध्ययन हो प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय राजनीतिक चिन्तन का मुख्य विषय रहा है। दूसरो शब्दों में, राज्य का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक अध्ययन का परिणाम ही राजनीतिक चिन्तन है जो आधुनिक राज्यशास्त्र का निर्माण करता है।

राज्य क्या है? उसका आविर्भाव क्यों हुआ है? उसका व्यावहारिक स्वरूप क्या है ? आदर्श राज्य क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है? राज्य किस तरह समाज की विभिन्न क्रिया–प्रक्रिया को प्रभावित करता है और स्वयं उनसे कैसे प्रभावित होता है ? आदि कुछ ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जो आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्य के मस्तिष्क को मथते रहे हैं और उसे इनका उचित और व्यावहारिक उत्तर खोज निकलने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

उपर्युक्त प्रश्न स्वतः सिद्ध करते हैं कि राजनीतिक चिन्तन का क्षेत्र अति विस्तृत ही नहीं, असीमित है और उसमें मानव समाज की सम्पूर्ण गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। उसके इस असीमित विस्तार को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध लेखक फिलिस डोवल (Phulios Doyle)का यह कथन काफी उपयुक्त लगता है जिसके अनुसार उन्होंने कहा है–

''मनुष्य की प्रकृति तथा उसके कार्य और शेष विश्व से उसका सम्बन्ध जिसमें सम्पूर्ण जीवन का विवेचन स्वतः निहित है और इन दोनों पक्षों की परस्पर क्रिया–प्रतिक्रिया से उत्पन्न होने वाली मनुष्य की अपनी सह–जातियों के सम्बन्ध की समस्या ही राजनीतिक चिन्तन का प्रमुख विषय है। इसके अन्तर्गत राज्य की प्रकृति, उसका लक्ष्य तथा उसके कार्य समाविष्ट है।''[2]

राजनीतिक चिन्तन की उपयोगिता और महत्व
(UTILITYAND IMPORTANCE OF POLITICAL THOUGHT)

राजनीतिक चिन्तन को अनुपयोगी ही नहीं, हानिप्रद मानने वाले चिन्तकों की कमी नहीं है। उनमें बेकन (Bacon), लेस्ली स्टीफेन (Leslie Stephon), बर्क (Burke), डनिंग (Dunning)आदि विद्वान प्रमुख है। राजनीतिक चिन्तन की निरर्थकता की ओर संकेत करते हुए बेकन का कथन है कि ''यह भगवान को अर्पित की हुई कन्या के समान बांझ है।'' तो लेस्ली स्टीफेन का कहना है कि ''वे देश भाग्यशाली है जिनके पास कोई राजनीतिक दर्शन नहीं है क्योंकि ऐसा तत्व चिन्तन निकट भविष्य में होने वाली क्रान्तिकारी उथल–पुथल का सूचक होता है।'' बर्क ने इस ओर इंगित करते हुए कहा है कि ''जब लोगों में राजनीतिक सिद्धान्त निर्मित करने की प्रवृति का उदय होता है तो वह समझ लेना चाहिए कि राज्य का संचालन भली प्रकार से नहीं हो रहा है।'' डर्निंग भी इसी प्रकार का मत प्रगट करते हुए कहते है कि ''जब कोई राजनीतिक पद्धति राजनीतिक दर्शन का स्वरूप ग्रहण करने लगे तो यह समझ लेना चाहिए कि उसके विनाश की घड़ी आ पहुँची है।'' राजनीतिक चिन्तन को अनुपयोगी और विध्वंसकारी मानने वाली इन युक्तियों के अतिरिक्त इसके विरूद्ध जो सबसे बड़ा तर्क दिया जाता है, वह इसकी कोरी विचारात्मकता और काल्पनिक प्रकृति के सम्बन्ध में है। ऐसे आलोचकों का मत है कि कोरा विचारात्मक और काल्पनिक प्रकृति का होने के कारण यह वस्तु–स्थिति की उपेक्षा करता है। जिसके परिणाम स्वरूप वह वास्तविक दृष्टि से मनुष्य का मार्गदर्शक होने के स्थान पर उसके मस्तिष्क में दिशाभ्रम उत्पन्न कर उसे गलत रास्ते की ओर धकेल देता है। इस तरह वह उपयोगी और लाभप्रद होने के बजाय अन्ततः मनुष्य और उसके समाज के लिए हानिकारक और गलत परिणामों को जन्म देने वाला सिद्ध होता है।

इस तर्क की पुष्टि करते हुए आगे उनका कथन है कि राजनीतिक चिन्तन के इस मुख्य दोष का प्रमुख कारण यह है कि राजनीतिक सिद्धान्त विवेचन और शासन–संचालन दो भिन्न–भिन्न प्रकार के कार्य हैं। प्रायः यह देखा गया है कि अच्छे विचारक उत्तम शासक नहीं होते और उत्तम शासक अच्छे विचारक नहीं होते। अतः सैद्धान्तिक ज्ञान व्यावहारिक नहीं होता और व्यवहारिक ज्ञान सिद्धान्त पर आधारित नहीं होता। प्लेटो इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है जो अपने आदर्श राज्य को व्यावहारिक रूप देने में पूर्णतः असफल हुआ। परिणाम स्वरूप अपने जीवन के अन्तिम भाग में आस्थाविहीन होकर उसे निराशा का सामना करना पड़ा। राजनीतिक चिन्तन का यह विरोधाभास उसके चरित्र की एक बुनियादी कमजोरी है जो उसकी उपयोगिता के सम्मुख एक प्रश्नवाचक चिन्ह लगाती है।

राजनीतिक चिन्तन का दूसरा दोष परिस्थितिजन्य है। एक विचारक का राजनीतिक चिन्तन अधिकांशतः उन परिस्थितियों की उपज होता है जिनमें वह जीवित रहकर कार्य करता है। अतः वह समाज की समस्याओं का कोई अन्तिम उत्तर नहीं होता है। सामयिक चरित्र हो होने के कारण जब वे परिस्थितियाँ बदल जाती हैं तो उनसे उपजा राजनीतिक चिन्तन अनुपयोगी और असमयानुकूल हो जाता है। अतः उसके अध्ययन की उपयोगिता भी समाप्त हो जाती है। फिर भी कुछ लोग मरे हुए बन्दर के बच्चे की तरह उसे अपने सीने से चिपकाये रहते हैं। परिणाम स्वरूप समाज के अन्दर कई बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस तरह राजनीतिक चिन्तन सामाजिक विकास में एक सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करने के स्थान पर एक नकारात्मक भूमिका का निर्वाह करने लगता है और समाज को अन्ततः हानि पहुँचाता है।

इन विभिन्न दोषों के होते हुए भी राजनीतिक चिन्तन के अध्ययन की उपयोगिता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। पूर्णतया का दावा कोई चिन्तन नहीं कर सकता और यही बात राजनीतिक चिन्तन पर भी लागू होती है। दोष और अपूर्णता होते हुए भी उसका अध्ययन निश्चित रूप से मानवोपयोगी है जिसे निम्नलिखित आधारों पर सिद्ध किया जा सकता है–

- राज्य और उसका मूर्त रूप शासन–व्यवस्था हमारे सामाजिक–राजनीतिक जीवन की महत्वपूर्ण संस्थाएँ हैं। ये ही एकमात्र ऐसे संगठन हैं जिसकीं सदस्यता सभी मनुष्यों के लिए अनिवार्य है। राज्यविहीन मनुष्य नागरिक का स्तर प्राप्त नहीं कर सकता। परिणामस्वरूप वह उन अधिकारों को प्राप्त करने से वंचित हो जाता है जिनकी प्राप्ति उसके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास की एक अनिवार्य शर्त है। राज्य और शासन द्वारा उस सामाजिक व्यवस्था की स्थापना और संचालन किया जाता है जिसमें रहकर व्यक्ति उसके द्वारा प्रदत्त विभिन्न साधन–सुविधाओं का उपयोग कर अपने जीवन का विकास कर उसे निरापद और आनन्दमय बनाता है। अतः राज्य तथा शासन द्वारा संचालित समाज व्यवस्था सभी के जीवन को प्रभावित और नियन्त्रित करती है। वही उन रचनात्मक और निषेधात्मक निर्देशों तक नियमों का निर्माण कर उनका सभी से पालन करवाती है तथा सामूहिक जीवन–यापन से उत्पन्न संघर्षों का निवारण करती है जिससे मनुष्य का जीवन सुरक्षित और सरसतापूर्ण हो जाता है। इस दृष्टि से राज्य तथा शासन सम्बन्धों प्रश्नों पर चिन्तन–पतन हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। राजनीतिक चिन्तन इन प्रश्नों की व्याख्या करता है और उनके सम्भावित उत्तरों से हमें परिचित कराता है। इस दृष्टि से इसका अध्ययन हमारे लिए उपयोगी बन जाता है।

- राजनीतिक चिन्तन का मानव इतिहास पर गहरा और निर्णायक प्रभाव पड़ा है। हमारे राजनीतिक मनीषियों द्वारा समय–समय पर प्रतिपादित विभिन्न सिद्धान्तों ने मानव समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया है। रूसों के विचारों ने 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति को जन्म दिया जिसने स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व के सिद्धान्तों पर आधारित आधुनिक जनतन्त्र का मार्ग प्रशस्त किया। इसी तरह कार्लमार्क्स के विचारों ने 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सोवियत संघ में अक्टूबर क्रान्ति को सफल बनाया। इस क्रान्ति ने प्रगतिशील सिद्धान्तों पर आधारित साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना के द्वारा को उन्मुक्त कर दिया। इसी कड़ी में महात्मा गांधी ने अपने विचारों के द्वारा अहिंसक क्रान्ति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जो आणविक शस्त्रों के ढ़ेर पर बैठी विश्व व्यवस्था के जीवित रहने के लिए आधुनिक युग की एक ज्वलन्त आवश्यकता बन गयी है। कहने का तात्पर्य यह है कि राजनीतिक चिन्तन द्वारा प्रतिपादित विभिन्न सिद्धान्तों ने मानव समाज में क्रान्तिकारी बदलावों को जन्म ही नहीं दिया, बल्कि उसे विकास के नये आयाम भी प्रदान किये जिससे वह पूर्व की तुलना में और अधिक समृद्ध हुआ। अतः इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों के पीछे कार्य करने वाले कारणों और उनसे उत्पन्न प्रभावों का अध्ययन हमारे लिये अति उपयोगी है।

- राजनीतिक चिन्तन के अध्ययन का एक अन्य लाभ है कि वह हमें दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न राजनीतिक शब्दावलियों और उनके अर्थों से परिचित कराता है। जनतंत्र, राष्ट्रीयता, सम्प्रभुता, लोक–कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि शब्दों की परिभाषा हम राजनीतिक चिन्तन का अध्ययन करके ही जान सकते है। साथ ही हमें यह भी ज्ञात होता है कि इनका प्रयोग कब प्रारम्भ हुआ तथा इनके अर्थों में समय–समय पर क्या परिवर्तन हुए तथा आधुनिक समय में इन्हें किन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। जबकि आधुनिक समय में जनतन्त्र को राज्य का आदर्श स्वरूप माना जाता है।

- राजनीतिक चिन्तन के अध्ययन का एक अन्य महत्ता यह भी है कि उससे हमें अतीत की ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या करने और उन्हें सही अर्थों में समझने में बड़ी सहायता मिलती है। मानव इतिहास की सारी घटनाएँ बौद्धिक विचारों का परिणाम होती है। सभी राजनीतिक आन्दोलन राजनीतिक विचारों से अत्यन्त और अनुप्रेरित होते हैं। अतः उनका सही अध्ययन उनको जन्म देने वाले और अनुप्रेरित करने वाले राजनीतिक विचारों का अध्ययन करके ही किया जा सकता है। इस तरह अतीत को सही परिप्रेक्ष्य में समझने में राजनीतिक चिन्तन हमारी सहायता करता है।

- राजनीतिक चिन्तन के अध्ययन से हमें अतीत ही नहीं, वर्तमान को भी सही दृष्टि से समझने में सहायता मिलती है। वर्तमान की समस्याएँ अतीत की देन होती है। अतः अतीत का अध्ययन करके हम उनके वर्तमान स्वरूप को समझ सकते हैं और उनके समाधान के लिए आवश्यक वातावरण निर्मित कर सकते हैं। इस तरह हम अतीत के अध्ययन के माध्यम से वर्तमान को सुधार सकते हैं। उसे अपना इच्छित रूप दे सकते हैं और उसे उपयोगी बनाकर नयी व्यवस्था स्थापित करने में उनका सहयोग ले सकते हैं।

- यही नहीं राजनीतिक चिन्तन भविष्य के लिए हमारे मार्गदर्शक के रूप में भी कार्य करता है। विभिन्न राजनीतिक चिन्तकों द्वारा जिन आदर्श सामाजिक व्यवस्थाओं का निरूपण किया गया है तथा उन्हें प्राप्त करने हेतु जिन साधनों की ओर संकेत किया गया हैं, उनका यह कार्य हमें भविष्य में अपने सामाजिक विकास की दिशा निर्धारित करने में सहायता करता है। अरस्तू, प्लेटो, मार्क्स और गांधी आदि कुछ विचारक इस दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। वे लोग सिर्फ राजनीतिक चिन्तक ही नहीं थे, वरन् सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्थाओं के निर्माता भी थे। इन्होंने सिर्फ समाज के राजनीतिक पक्ष पर ही नहीं इसके अन्य पक्षों पर भी अपने विचार प्रकट और प्रतिपादित किये है और एक सम्पूर्ण समाज व्यवस्था का चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। हम आवश्यकतानुसार उन्हें अपनाकर नये समाज के निर्माण में उनसे सहायता प्राप्त कर सकते है। राजनीतिक चिन्तन का अध्ययन इस दृष्टि से भी हमारे लिये बहुत लाभदायक है।[3]

अतः उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि राजनीतिक चिन्तन का अध्ययन हमारे लिये सभी दृष्टियों से उपयोगी ही नहीं अत्यधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक भी है। बिना उसके न हम अतीत को समझ सकते हैं, न वर्तमान को सुधार सकते हैं और न भविष्य की आदर्श व्यवस्था को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं।

राजनीतिक चिन्तन का जन्म कहाँ और कैसे हुआ, यह एक दिलचस्प किन्तु विवादास्पद प्रश्न है। साधारणतः यूनानियों को धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक चिन्तन का जन्मदाता माना जाता है। इनके इस योगदान की ओर संकेत करते हुए राजनीतिशास्त्र के विद्वान वार्कर का कथन है कि ''राजनीतिक चिन्तन के जन्मदाता यूनानी है। इसका मूल स्रोत यूनानी मस्तिष्क का शान्त एवं सुस्पष्ट बुद्धिवाद है। भारत और जूडिया (पेलैस्टाइन) के लोगों की भाँति यूनानी भी धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने और इस जगत को विश्वास के आधार पर ग्रहण करने के बजाय चिन्तन के क्षेत्र में आगे बढ़े और दृश्यमान वस्तुओं पर आश्चर्य प्रकट करने का साहस करते हुए उन्होंने विवेक के प्रकाश में विश्व पर चिन्तन करने का प्रयास किया।''[4] डर्निंग ने भी इसी मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि ''पौर्वात्य आर्थों ने अपनी राजनीति को धर्मशास्त्रीय एवं आध्यात्मिक पर्यावरण से मुक्त कभी किया.....।उन्होंने कभी ऐसा अग्रगामी और निश्चयात्मक कदम नहीं उठाया जिससे नैतिक और राजनीतिक चिन्तन में भेद किया जा सके। यूरोप के आर्य (यूनानी) ही केवल ऐसे लोग थे जिनके साथ राजनीतिक चिन्तन करने वाले का विशेषण जोड़ा जा सकता है।''[5]

आधुनिक युग में इतिहासकारों और पुरातत्व–येताओं ने प्रारम्भिक राजनीतिक चिन्तन के बारे में जो शोध कार्य किया है उससे ऐसे तथ्य प्रकाश में आये हैं जिनके कारण पश्चिमी विद्वानों के द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त मतों की सत्यता के बारे में आशंका होने लगी है। अब इस बात को तथ्यानुकूल नहीं माना जाता कि पूर्वी देशों में प्राचीन काल में कभी किसी प्रकार का राजनीतिक चिन्तन किया ही नहीं गया और शासन तथा राजनीति के सम्बन्ध में उनके द्वारा महत्वपूर्ण राजनीतिक धारणाओं का प्रतिपादन नहीं हुआ। वस्तुतः अब यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत चीन, मिस्र, ईरान आदि देशों के निवासियों ने न केवल विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं की रचना की वरन् उन्होंने विभिन्न राजनीतिक समस्याओं पर गहन चिन्तन–मनन भी किया और कुछ ऐसे विचारों का प्रतिपादन किया जिनका बाद में पश्चिमी जगत में विकास किया गया। इसी तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए **मैक्सी का कथन** है कि हजारों

वर्ष पुरानी सभ्यताओं का हमारा ज्ञान हमें यह बतलाता है कि इन लुप्त युगों की जातियों का राजनीतिक चिन्तन कितना सम्पन्न था। विचार और व्यवहार, दोनों ही बातों में उन्होंने यूरोपीय विचारों की पूर्व घोषणा की, उनके समकक्ष विचारों की सृष्टि की ओर एक सीमा तक तो ऐसे विचारों का सिलान्यास भी किया जो आगे चलकर यूरोपीय राजनीतिक चिन्तन में घुल–मिल गये।[6]

इतना होते हुए भी इस बात की सत्यता को स्वीकार करने से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि यूनानियों से राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में अग्रणी होने के बावजूद इन विभिन्न पौर्वात्य जातियों का राजनीतिक चिन्तन सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध और वैज्ञानिक आधार लिये हुए नहीं था। **गैटिल** के अनुसार, ''प्राच्य साम्राज्य–मिस्र, बेबीलोनिया, असीरिया और ईरान–अपनी सामान्य परिस्थितियों तथा सामाजिक वातावरण के कारण व्यवस्थित राजनीतिक चिन्तन का निर्माण नहीं कर पाये। उनकी अर्थव्यवस्था सरल तथा कृषि प्रधान थी, उनके धार्मिक विचार जटिल तथा अन्धविश्वासपूर्ण थे, समाज वर्गों में विभक्त था जो जातियों के रूप में स्थिर हो चुके थे और व्यक्ति के दैनिक जीवन पर कठोर तथा व्यापक नियन्त्रण था। इन सब तत्वों ने स्थापित संस्थाओं को गतिहीन बना दिया और उन्हें धार्मिक पवित्रता प्रदान की। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों को अपनी संस्थाओं की उत्पति, स्वभाव अथवा सुधार के सम्बन्ध में चिन्तन करने का साहस न हो सका।''[7] इसलिए ब्राह्मणों, बौद्धों तथा कन्फ्यूसियस के अनुयायियों की प्रारम्भिक रचनाओं में हमें यत्र–तत्र ऐसे वाक्यांश और सूक्तियाँ मिल जायेंगी जिनका राजनीतिक विषयों से सम्बन्ध हैं किन्तु वे सब धार्मिक और नैतिक सिद्धान्तों में गुथी हुई है। राजनीतिक वर्णन के रूप में व्यवस्थित ढ़ंग से उन्हें कभी भी विकसित नहीं किया गया।[8] अतः अन्य जातियों को राजनीतिक चिन्तन को प्रारम्भ करने का श्रेय प्राप्त होते हुए भी उसे सर्वप्रथम व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का श्रेय यूनानियों को ही प्राप्त है। उन्होंने ही सबसे पहले विशुद्ध विवेक और तर्क के आधार पर विभिन्न राजनीतिक समस्याओं के समाधान का प्रयास किया और राज्य सम्बन्धी चिन्तन की उस परम्परा की स्थापना की जिसे हम वैज्ञानिक चिन्तन कहते हैं। अतः जिमर्न ने उनके बारे में यह सत्य ही कहा है कि ''यूनानियों की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने राजनीतिक चिन्तन का आविष्कार किया।''[9] मैकिलवैन ने भी इस तथ्य का समर्थन करते हुए लिखा है कि ''राजनीतिक सम्बन्धों पर चिन्तन की जो धारा यूरोपियन जगत तथा यूरोपीय संस्कृति से प्रभावित देशों में बह रही है उसका प्रारम्भ यूनानियों से हुआ है।''[10]

राजनीतिक चिन्तन का विकास क्रम
(DEVELOPMENT PROCESS OF POLITICAL THOUGHT)

राजनीतिक चिन्तन का विकास क्रम मुख्य रूप से तीन युगों में विभाजित हैं–

(1) प्राचीन युग

(2) मध्य युग

(3) वर्तमान युग।

प्राचीन युग का कालक्रम 300ई.पू. तक माना जाता है। यह युग सुकरात, प्लेटो, अरस्तु आदि यूनानी विचारकों का युग है जिनके चिन्तन का केन्द्र बिन्दु नगर–राज्य (Polis or City Stats) थे। आदर्श नगर–राज्य की स्थापना इनके चिन्तन का मुख्य उद्देश्य था।

मध्य युग का कालक्रम 300ई.पू. से 1500 शताब्दी ई. तक विस्तृत थे। चौथी शताब्दी ई.पू. में सिकन्दर द्वारा नगर–राज्यों का विनाश कर उनके स्थान पर विश्व–साम्राज्य की स्थापना की गयी। इस ऐतिहासिक घटना ने राजनीतिक विचारों में भी क्रान्तिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया। अब विश्वव्यापी साम्राज्य को राजनीतिक चिन्तन का आदर्श माना

जाने लगा। विश्व साम्राज्य की स्थापना की इस प्रवृति ने सार्वभौमवाद (Universalism)को जन्म दिया जो इस युग में सिकन्दर, रोमन सम्राटों और थार्लमेन आदि के द्वारा स्थापित सभी साम्राज्यों का आधारभूत सिद्धान्त रहा। ईसाई चर्च की स्थापना ने भी इस प्रवृत्ति को बल प्रदान किया। चर्च के प्रभुत्व की वृद्धि ने राजनीतिक चिन्तन या धर्म के प्रभाव को पुष्ट किया। जिसके परिणाम स्वरूप मध्ययुगीन राजनीतिक चिन्तन पर चर्च राज्य सत्ता संघर्ष का भी गहरा प्रभाव पड़ा।

आधुनिकयुग का कालक्रम 1500ई. से वर्तमान समय तक है। इस युग का प्रारम्भ 16वीं शताब्दी में होने वाले पुनरूत्थान(Renaissance) तथा धर्म सुधार (Reformation)आन्दोलन से हुआ। इस युग में राजनीतिक चिन्तन का मुख्य विषय मध्ययुगीन सार्वभौमवाद के स्थान पर 'राष्ट्र राज्य' (Nation State)हो गया। राष्ट्रीयता का उत्थान इस युग की मुख्य विशेषता है जिसने राष्ट्रवाद को जन्म दिया जो अब आधुनिक स्थितियों से प्रभावित होकर शनैः–शनैः अन्तर–राष्ट्रवाद (Inter-Nationalism)में परिवर्तित होता जा रहा है।[11]

अन्त में निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक चिन्तन का उपरोक्त सम्पूर्ण दर्शन नगर–राज्यों की व्यवस्था, राजदर्शन के विकास की प्रारम्भिक अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है, और हमारे सामने उन तथ्यों और पद्धतियों को प्रस्तुत करती है जिनसे प्रेरित होकर राजशास्त्र का एक विज्ञान के रूप में प्रारम्भ सम्भव हुआ। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से इसका अत्यधिक महत्व है।

❖❖❖

संदर्भ सूची :–

[1]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page17.
[2]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page18.
[3]. "Prinicipal of Political Science"- Dr. Pukhraj Jain & Dr. N.D. Arora, Page18-19.
[4]. E. Barker, "Greek Political Theory Plato and His Predecessors, 1918, p.1.
[5]. "The Oriental Aryans never freed their politics from the theological and metaphysical environment in which It in embedded to day….'The Aryans of Europe have shown themselves to be the only people to whom the term 'political' may be properly applied….." -W.a. Duuning : "A History of Political Theories', Vol. 1 Introduction, pp .xix-xx.
[6]. c.c. Maxey : "Political Philosophies", 1950, p.8.
[7]. R.G. Gettell : 'History of Political Thought' (Hindu Edition , Agra) 1950, p. 23.
[8]. W.A. Dunning : op. cit., p. 24.
[9]. Quoted by C. Verker : The Development of Political Theory.
[10]. C.H. Mcllwain : "The growth of Political Thought in the West'. 1932, 13.

❖❖❖